ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /5

# राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना : एक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

*रमाकान्त सिंह एवं **प्रो0 एम0 पी0 सिंह
*शोधछात्र एवं ** शोध पर्यवेक्षक
इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

## शोध सारांश

स्वतंत्रता से पूर्व स्थापित राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मूल रुप से भारतीय संस्कृति के सरंक्षण से जुड़ी रही है। हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान तथा उसके गौरवशाली परम्पराओं को पुनर्जीवित करने का प्रयास संघ के द्वारा अपनी स्थापना काल से ही किया जा रहा है। बौद्धिकता के साथ समाज सेवा से जुडे हुए विभिन्न कार्यो में इसकी सहभागिता इसे आम जनमानस के मध्य एक लोकप्रिय संगठन के रुप में स्थापित करता है। राजनीतिक संरक्षण एवं प्रतिद्वन्द्विता से मुक्त राष्ट्रीय स्वयं संघ अपने अनुषंगी संगठनों के माध्यम से सास्कृतिक , नैतिक एवं आर्थिक उत्थान के साथ राजनीतिक विचारधारा को प्रभावित करने का कार्य कर रही है। अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष में प्रवेश करने के लिए तत्पर संघ अपनी मूल विचारधारा को सजोए हुए देश काल एवं परिस्थितियों के अनुरुप स्वयं को परिवर्तित करती रही है।

भारत में राजनीतिक उद्देश्यों के लिए संगठित होने वाले संगठनों की संख्या बहुतायत में मिलती है, परन्तु सांस्कृतिक उद्देश्य को समक्ष रख संगठन की स्थापनाका बहुत ही कम प्राप्त होती है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के संरक्षण 'शोध निर्देशक, इतिहास संस्कृति एवं पुरात्तव विभाग, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या ''शोध छात्र, इतिहास संस्कृति एवं पुरात्तव विभाग, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के लिए स्वतंत्रता से पूर्व जिस राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना डॉ0 बलिराम हेडगेवार के द्वारा की गई थी। वर्तमान समय में भी इसके द्वारा अपने उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निरन्तर कार्य कर रहा है। भारतीय जनजीवन के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक, कला, साहित्यिक इत्यादि अर्थात समग्र रुप में भारतीय जनजीवन को प्रभावित करने वाले संगठनों में इसकी भूमिका को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। राजनीतिक दृष्टिकोण से विलग यह संगठन समाज सेवा तथा विभिन्न आपदाओं के समय निःस्वार्थ भाव से जुडा रहता है। राष्ट्रीय स्वयं संघ सांस्कृतिक आधार पर विकसित होने वाला एक बौद्धिक संगठन है। एक प्रकार से यह हिन्दू एवं हिन्दुत्व को भारतीय संस्कृति का एक अंग मान कर उसके धार्मिक एवं वैचारिक उन्नयन का प्रयास करती रही है।

अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष के करीब तक का सफर जिस प्रकार से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा जिस प्रकार से पूर्ण किया गया, वह न केवल एक संस्था का इतिहास है, वरन् भारतीय संस्कृति की विकास यात्रा के रुप में देखा जा सकता है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशक में मुस्लिम लीग की स्थापना ने मुस्लिम वर्ग के राजनीतिक उत्थान को एक नवीन दिशा देने का प्रयास किया। यह संगठन केवल मुस्लिम वर्ग के विकास से जुडा हुआ था। हिन्दुओं की सुरक्षा तथा उनकों सांस्कृतिक संरक्षण देने के उद्देश्य से इस संगठन की स्थापना की गई।

1921 का वर्ष भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में एक नवीन प्रकार की जागृति एवं चेतना का काल माना जाता है। असहयोग एवं खिलाफत आन्दोलन की एका ने सम्पूर्ण भारत में अंग्रेजां के विरुद्ध संघर्ष को एक नवीन आयाम प्रदान किया था, परन्तु इस दौरान अनेक स्थानों पर हिन्दू एवं मुसलमानों के मध्य

संघर्ष की स्थिति बनी। आन्दोलन में मुस्लिम रुढ़िवादी तत्त्वों की अधिकता होने के कारण इसके अनेक प्रकार के दुष्परिणाम समाने आए। खिलाफत आन्दोलन के दौरान धार्मिक भावना के अत्यधिक उभार के कारण दक्षिण भारत में मालाबार क्षेत्र में मोपला विद्रोह हुआ। इस विद्रोह में हिन्दुओं को बड़ी संख्या में मारा गया। मंदिरों एवं दुकानों को लूट लिया गया तथा महिलाओं के साथ बड़ी संख्या में दुर्व्यवहार की घटनाएँ हुई। इस दौरान लगभग 20000 हिन्दुओं को इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया। इस प्रकार की अमानवीय घटना ने राष्ट्रवादियों को झकझोर कर रख दिया। मुसलमानों में अचानक गायों की हत्या पर अधिक जोर देना प्रारम्भ कर दिया। मस्जिदों के सामने संगीत बजाने का विरोध करने लगे। इस प्रकार की घटनाओं का मूल कारण खिलाफत आन्दोलन को माना जाता है।(1)
डॉ0 केशव बलिराम हेडगेवार को इस प्रकार की घटनाओं से बहुत वेदना हुई। उन्होने सोचा कि इस प्रकार की घटनाओं को किसी व्यक्ति के द्वारा रोक पाना संभव नही है। इसके लिए एक संगठित सोच की आवश्यकता है। एक संस्था अथवा एक संगठन ही इस प्रकार की स्थितियों में कार्य करने में सक्षम हो सकता है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण विदेशी संस्कृति के स्थान पर भारतीय संस्कृति को प्रतिष्ठित करना था। मैकाले की शिक्षा पद्धति के परिणामस्वरुप बड़ी संख्या में भारतीय अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को निम्न समझने लगे थे। इस प्रकार एक ऐसे बौद्धिक वर्ग का निर्माण हो रहा था, जो कि अपनी अस्मिता के प्रति नफरत की भावना रखने लगा था। उसने भरतीय शिक्षा एवं संस्कृति को हेय मान लिया था। वह अपने स्व को भूलने के साथ ही राष्ट्र निर्माण के मूलाधार स्वधर्म, स्वसंस्कृति, स्वसाहित्य, स्वभाषा के तत्त्वों को विस्मृति के गर्त में फैक चुका था। पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति को अपनाने में अपने आपकों सभ्य समझने लगा था। इस प्रकार भारतीय को अतीत के गौरव का स्मरण कराने के लिए एक सांस्कृतिक संगठन की आवश्यकता को डॉ0 हेडगेवार महसूस कर रहे थे।(2)

इस्लाम एंव अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति सर्वाधिक प्रभावित हुई। भारतीय समाज विभिन्न जातियों, पंथों, संप्रदायों में विभक्त कर दिया गया। भाषा, धर्म, जाति आदि का प्रयोग विघटनकारी तत्त्वों के रुप प्रेरक के रुप में कार्य करने लगे। इन सभी का परिणाम यह हुआ कि हिन्दू समाज राजनीतिक एवं सामाजिक स्वरुप दुर्बल हो गया था। इस प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करने के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने प्रभावी भूमिका निभाई तथा अपनी निष्ठा के कारण अधिक विकसित स्वरूप में आगे बढ़ सकी।

इस प्रकार के विभिन्न प्रश्नों से व्यथित होकर डॉ0 हेडगेवार ने एक ऐसी संस्था का स्वप्न देखा, जो कि स्वाधीनता के लिए प्रयास करते हुए स्वतंत्रता के पश्चात भारत को परम वैभव सम्पन्न राष्ट्र में परिणित कर सके।

इन सभी कारणों के समुच्चय से प्रेरित होकर डॉ0 केशव बलिराम हेडगेवार ने 1925 में विजयदशमी के दिन संघ की स्थापना की। इस दौरान इसके संस्थापक सदस्यों में भाऊ जी काबरें, अण्णसोहनी, श्री विश्वनाथ राव केलकर, श्री बालाजी हुद्दार, श्रीबापू राव भेदी प्रमुख थे।(3) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के एक प्रकार से शारीरिक, सैनिक तथा बौद्धिक तीनों प्रकार की शिक्षा एवं दीक्षा के कार्यो को संचालित करता है।

शारीरिक प्रशिक्षण एवं नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करना भी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना का एक कारण रहा है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। स्वस्थ शरीर तथा स्वस्थ मन ही नैतिक मूल्यों का पालन कर सकता है। इस प्रकार किसी राष्ट्र निर्माण में यह महत्वपूर्ण साधन का कार्य करते है। इस संसाधन को समग्र रुप से प्रशिक्षित करने के लिए एक संगठन की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा था। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना के द्वारा इस कार्य को पूरा किया

जाता है।[4] संघ द्वारा प्रातः तथा सायं शाखा लगाने की योजना बनाई गई। यह शाखाएँ किसी मंदिर के प्रांगण, उद्यान अथवा सार्वजनिक स्थल पर लगाए जाते थे। संघ के सदस्यों को इसमें आना अनिवार्य होता था। इन शाखाओं में अनेक प्रकार के व्यायाम, योगासनों तथा विभिन्न प्रकार के खेल की व्यवस्था होती थी। इसके साथ ही नैतिक मूल्यों तथा आदर्शो के लिए बौद्धिक संगोष्ठी का आयोजन किया जाता था।

वास्तव में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना तथा उसका क्रियाकलाप का स्वरुप भिन्न प्रकार से किया गया था। किसी संस्था की स्थापना के समय उसका कार्यालय, कार्याविधि, रसीद, चन्दा निधि, आयोजन इत्यादि का विज्ञापन किया जाता है तथा विभिन्न प्रचार माध्यमों से उसका प्रचार किया जाता है। परन्तु संघ की स्थापना के समय इस प्रकार का कोई कार्य नही किया गया। विजयदशमी के दिन स्थापित इस संगठन में केवल दो बातो पर विशेष बल दिया गया। प्रथम हिन्दू राष्ट्र का पुनरुत्थान तथा द्वितीय इसकों साकार करने के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं का समूह। इन दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए डॉ0 हेडगेवार जी ने अपना समस्त जीवन समर्पित कर दिया। जहाँ तक इस संगठन के नामकरण का प्रश्न है तो प्रारम्भ में सभी कार्य केवल संघ के नाम से ही किए जाने लगे थे। 17 अप्रैल, 1926 को रामनवमी के दिन सभी कार्यकर्ताओं को रामटेक ले जाने तथा उसकी अलग पहचान बनाने के उद्देश्य से इसका नामकरण करना निश्चित किया गया। सभा में कुल 26 सदस्य उपस्थित थे। सदस्यों द्वारा विचार मंथन के पश्चात तीन नाम सभा के समक्ष रखे गए। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, जरिपटका मण्डल तथा भारतोद्धारक मण्डल। इनमें से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ नाम को संघ के उद्देश्यों को सही अर्थो में प्रतिबिम्बित करने वाला माना गया। डॉ0 हेडगेवार जी ने राष्ट्रीय शब्द पर विशेष जोर दिया। उनका मानना था कि हिन्दू की पहचान को राष्ट्रीय शब्द से जोडा जाना चाहिए। वे हिन्दू तथा राष्ट्रीय शब्द को पर्यायवाची मानते थे। उनका मानना था कि हिन्दू कोई धर्म नही वरन एक जीवन पद्धति है, एक संस्कृति है।[5]

डॉ0 हेडगेवार पूर्व लम्बें समय तक हिन्दू महासभा से जुड़े रहे थे। 1930 में उन्होने इस संगठन से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया तथा स्वातंत्र्य नामक पत्रिका का प्रकाशन नागपुर से प्रारम्भ किया। यद्यपि सरकारी दमन के कारण इसमें वह सफल नही हो सके। डॉ0 हेडगेवार जी ने राजनीति की प्रचलित विचारधाराओं तथा कार्यप्रणाली को स्वीकार न कर संस्कृति पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि राष्ट्र के बहुमुखी विकास के लिए जिस उत्साह की आवश्यकता है, वह तभी उत्पन्न किया जा सकता है, जबकि सांस्कृतिक एकता के लिए संभव प्रयास किया जाए। इसके लिए उन्होने संघ को राजनीतिक आश्रय से दूर रखा।[6] इसी कारण राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा गंभीर, पुनरूत्थानवादी प्रवृत्तियों से अनुप्राणित रहा है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के माध्यम से हेडगेवार जी ने हिन्दुओं को सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता का पाठ पढ़ाया, जो कि उसकी मूल शक्ति है। हिन्दुओ की सांस्कृतिक शक्ति को भारतीय संस्कृति का मूल स्वीकार करते हुए उसे लोगों तक प्रसारित करने का प्रयास किया गया। इस संस्कृति में इस्लामी, इसाई तथा अन्य पाश्चात्य तत्त्वों को सम्मलित करना संभव नही है। संघ का विचारधारा रही है कि शान्तिपूर्ण तथा दीर्घकाल तक संगठित होकर ही राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

डॉ0 केशव बलिराम हेडगेवार के द्वारा इस संगठन की स्थापना की गई, तो लोगों को यह विश्वास नही था कि यह संगठन अधिक वर्षो तक कार्य कर सकेगा। परन्तु देशकाल एवं परिस्थिति तथा योग्य प्रचारकों के कारण यह संगठन न केवल लगातार विकसित होता गया, वरन वर्तमान समय में एक विशाल वटवृक्ष के समान हो गया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष पूरा करने के करीब है। पिछलें 97 वर्षो में यह संगठन न केवल भारतीय फलक पर वरन विश्व स्तर पर अपने आपकों स्थापित करने में सफल रहा है। राष्ट्र के समक्ष उत्पन्न होने वाली समस्याओं का निराकरण

राष्ट्रीयता की भावनात्मक विचारधारा के आधार पर करने का प्रयास इस संगठन के द्वारा लगातार किया जाता रहा है। इस प्रकार की परम्परा संघ में इसकी स्थापना काल से ही रही है।(7) वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपने अनुषंगी संगठनों के माध्यम से सास्कृतिक एवं आर्थिक उत्थान के साथ राजनीतिक विचारधारा को प्रभावित करने का कार्य कर रही है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष पूरा करने के करीब है। पिछलें 97 वर्षो में यह संगठन न केवल भारतीय फलक पर वरन विश्व स्तर पर अपने आपकों स्थापित करने में सफल रहा है। राष्ट्र के समक्ष उत्पन्न होने वाली समस्याओं का निराकरण राष्ट्रीयता की भावनात्मक विचारधारा के आधार पर करने का प्रयास इस संगठन के द्वारा लगातार किया जाता रहा है। इस प्रकार की परम्परा संघ में इसकी स्थापना काल से ही रही है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपने अनुषंगी संगठनों के माध्यम से सास्कृतिक एवं आर्थिक उत्थान के साथ राजनीतिक विचारधारा को प्रभावित करने का कार्य कर रही है।(8)

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक के रूप में हेडगेवार जी के उत्तराधिकारी माधव सदाशिव गोलवलकर हुए। उन्होने न केवल पूर्व परम्परा को आगे बढ़ाया, वरन उसकों एक नवीन दिशा देने का कार्य किया। धार्मिक, शैक्षाणिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा अन्य क्षेत्रों के प्रमुख व्यक्तियों को संघ से जोडने का कार्य किया।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपनी मूल विचारधारा तथा चारित्रिक संस्कारों पर अड़िग रहते हुए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर करती रही है। इसी के परिणामस्वरूप संघ मे अन्तर्गत विभिन्न प्रकल्पों का विकास हुआ। राष्ट्र सेविका समिति, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, वनवासी कल्याण आश्रय, भारतीय मजदूर संघ, विद्या भारती, विवेकानन्द केन्द्र, भारत विकास परिषद्, भारतीय किसान संघ, भारतीय साहित्य परिषद्, दीनदयाल शोध संस्थान, भारतीय इतिहास संकलन परिषद्, भारतीय शिक्षक संघ, संस्कार भारतीय संस्कृति, भारतीय राष्ट्रीय सिक्ख संगठन, विश्व हिन्दू परिषद्, स्वदेशी जागरण मंच, अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद्, हिन्दू जागरण मंच, प्रज्ञा भारती, विज्ञान भारती, लघु भारती, पूर्व सैनिक सेवा परिषद्, सहकार भारती, अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत समाजिक समरसता इत्यादि विभिन्न संगठनों के माध्यम से अपने कार्य को आगे बढ़ा रही है।(9) भारत के अतिरिक्त विभिन्न देशों में इसकी अनेक शाखाएँ कार्य कर रही है। इन सभी संगठनों का अपना अपना स्वतंत्र विभाग तथा अपनी अपनी कार्यशैली है, परन्तु सभी संगठनों के सदस्य अपने आपकों एक ही परिवार का हिस्सा मानते है राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं उसके विभिन्न अनुषंगी संगठनो तथा उनके उद्देश्यों का विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि विश्व में इसके समान कोई अन्य संगठन नही है, जो कि इतने व्यापक स्तर पर सामाजिक कार्य करता हो। वास्तव में यह एक जन आन्दोलन है, जिसमें जन ही इसके सूत्रधार है तथा जन ही इसके प्रगति के वाहक है। संघ के इतिहास का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि संघ कभी भी सुविधा सम्पन्न नही रहा है। निरन्तर असुविधाओं से जूझते हुए आलोचनाओं तथा प्रतिबन्धों के पश्चात लगातार फलता फूलता रहा। संघ के कार्यकर्ता विपरीत परिस्थितियों में भी एकनिष्ठ होकर कार्य करते रहे। राजनीतिक एंव व्यक्तिगत कारणों से संघ के किसी प्रकल्प से सम्बन्ध विच्छेद करने के पश्चात भी व्यक्ति संघ की मूल शाखा में आस्था बनाए रखते थे।(10)

विनोबा भावे जी का मानना था कि किसी भी संगठन को चलाने के लिए शक्ति, दिशा एवं गति की आवश्यकता होती है। इनके बिना कोई संगठन सुचारु रुप से कार्य नही कर सकता है। शक्ति संगठन का केन्द्र बिन्दु होता है, जो व्यष्टि तथा समष्टि के विचारो, संसाधनों से युक्त होती है तथा उसमें गति एवं सम्यक दिशा विवेकवान् तथा विचारवान कार्यकर्ता प्रदान करते है। संघ को इसी प्रकार के संगठन की श्रेणी में रखा जा सकता है।(11) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विकास में योगदान सर संघ संचालकों के साथ साथ उनके कार्यकर्ताओं तथा स्वयं सेवकों द्वारा हुआ है। इन सभी ने निष्ठा, ईमानदारी तथा

लगन से संघ का बिस्तार किया है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक मूल्यों का विघटन, वोट बैंक की राजनीति, पंथनिरपेक्षता का राजनीतिकरण, राजनीतिक दलो की अवसरवादिता इत्यादि ऐसे कारण रहे है, जिनके कारण संघ को अनुकूल अवसर प्राप्त हुआ। इन परिस्थिति में संघ की विचारधारा का द्रुत गति से विकास हुआ। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का यदि विभिन्न क्षेत्रों में उसके द्वारा किए जाने वाले कार्यो का विश्लेषण किया जाए तो उसकी भूमिका में 1980 के दशक के पश्चात क्रान्तिकारी स्वरूप में हमारे समक्ष उपस्थित होती है। इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में संघ ने अपने विचारों एवं नीतियों को समयानुकूल स्वरूप प्रदान किया।

वर्तमान में एव अतीत काल में राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ की विचारधारा, उसकी प्रकृति एवं उद्देश्य उसके उद्भव के साथ जुड़े हुए हैं। संघ के सम्बन्ध में कुछ लोगों के विचार है कि संघ बदल रहा है। इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि सभी जीवित प्राणी अपने स्वाभाविक रुप में बदलते है। यह उसके विकास की तरफ संकेत करता है। जो बदल नही रहा है वह जीवांत नही है। परन्तु इस प्रकार के परिवर्तन को अपनी जीवनधारा के शिराओं को काट कर नही अपनाया जा सकता। संघ में भी देश काल एवं परिस्थितियों के अनुरुप बदलाव दिखाई देता है तथा आगे की विकास यात्रा में भी इस प्रकार के बदलाव देखने को मिलगें। परन्तु इस प्रकार के परिवर्तन में भी संघ अपने मूलभूत उद्देश्य को नही भूलता। संघ अस्पृश्यता जातीयता, सांप्रदायिकता, प्रांतीयता तथा भाषा की सर्कीणता को मिटाकर एक राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करना चाहता है तथा इस कार्य में वह निरन्तर आगे बढ़ रहा है।

## सन्दर्भ ग्रंथ


(1) विजय कुमार, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ क्या, क्यों, कैसे ?,प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली,2022,पृ0 सं086

(2) नाना देशमुख, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, प्रभात पेपर बैक, नई दिल्ली, 2020, पृ0 सं0 29

(3) डॉ0 सदानन्द, दमोदर, सप्रे, परम वैभव के पथ पर, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ0 सं0123

(4) हो0 वा0 शेषाद्रि, कृत रूप संघ दर्शन, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ0 सं0 215

(5) राजेन्द्र नाथ तिवारी,राष्ट्रवाद चिंतन एवं विकास, समदर्शी प्रकाशन, रोहतक,हरियाणा,2019,पृ0सं0164

(6) सुधीर रंजन सिंह, हिन्दी समुदाय एवं राष्ट्रवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ0 सं0 123

(7) हरिश्चन्द्र वर्धवाल, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : एक परिचय, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0 6

(8) माधव सदाशिव गोलवलकर, विचार नवनीत (श्री भारत भूषण आर्य अनु0),ज्ञान गंगा प्रकाशन,जयपुर, राजस्थान, षष्ठम् संस्करण, 2018, पृ0 सं0 78

(9) डी0डी0पटनायक, हिन्दू नेशनलिज्म इन इण्डिया,दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, दिल्ली,1988,पृ0 सं0134

(10)सुनील अंबेडकर, द आर0 एस0 एस0 : रोडमैप्स फॉर द 21 सेंचुरी, रुपा पब्लिकेशन, भारत, 2019, पृ0सं0121

(11)अरुण आनन्द, नो एबाउट आर0 एस0 एस0, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ0 सं0 78